

DPN 6686

गुह्यकाली स्तोत्र GUHYAKĀLĪ STOTRA

Title :

Run. No. 7412

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 17.4 X 7.1

Folios 4

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator शंकर Shankara

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Beq. ॐ नमः श्री गणपतये नमः ॥ श्री श्री श्री गुह्यकालिकायै नमः ॥

P.T.O.

गुहकाली महाकाली गुहश्री गुहभैरवी ।

योगेश्वरी महामाया महायोगेश्वरी शिवा ॥ १ ॥

col. शंकरेण रचितां सदाजपेन रत्न नवरत्न मालिका ॥ इति
नवरत्न मालिका समाप्त ॥

सिद्धरो ॥ ११ ॥ श्रीं करे हार वितां सदा नृपे नमः रत्न नवरत्न मालिका ॥

नवरत्न मालिका समस्त ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ नमः श्री गणपते नमः ॥ श्री श्री श्री गुरु काले काले नमः ॥ गुरु

काली महा काली गुरु श्री गुरु रे नवी ॥ श्री गंधरी महामाया मला

श्री गंधरी निवा ॥ १ ॥ गुरु गंधरी सिद्धि काली श्री गंधरी सिद्धि य

निनी ॥ सिद्धि गुरु महा काली सिद्धि श्री गंधरी गंधरी ॥ २ ॥ चित्र

गुरु काली व. जाला सिद्धि कला लिका ॥ सिद्धि गंधरी सिद्धि

गुरु काली सिद्धि

लक्ष्मी, रुद्रकाली कपालिनी ॥ ३ ॥ काला कालवदना, उद्यकंत्या
कुमात्रिका ॥ सिद्धिउद्यमसालिके, देवताजकल्प ॥ ४ ॥ नाजना
अथर्ववेद, महामंडल यागिनी ॥ यागमाया यागगम्या, महाद्याधुमय
नी ॥ ५ ॥ महायात्रा कालांगी, कालसंकर्षिणी रक्षा ॥ नाथश्वरी नाजल
क्षी, नामरुद्रेश्वरी ॥ ६ ॥ कुलउद्यमसालिका, कुलउद्यमरक्ष
नी ॥ कुलउद्यमसाली, रुद्रवानलरुद्रवी ॥ ७ ॥ नृपिका, महाजिका

महावज्रनखायुधा ॥ कालाग्रिउद्य काली, बुद्धकंकालमालिनी ॥ ८ ॥
महाकालीमहाउद्य, महाकालीमहादया ॥ त्रिनि उद्यमसाली, त्रिम्
खिवज्रदक्षिणी ॥ ९ ॥ एककामसालीना, वज्रवक्राणिहीखना
॥ वज्रनेत्रावज्रपादा, वज्ररूपा रूपापहा ॥ १० ॥ अद्यउद्यमसाली
अद्यमंगलयागिनि ॥ अद्यप्रामंडला देवीनि, लयकल्यानदायिनी ॥
॥ ११ ॥ प्रेक्षाकामाहजननी, स्वरूपाक्षनदायिनी ॥ रुद्रवक्रामहाचक्षु

ॐ महाकाल उग्रहाकाली महाकाली त्र्यम्बक नमः ॥ ११४ ॥

कालवधु उग्रहाकाली ॥ ११५ ॥ श्रीमहा उग्रहाकाली व. जगत्माता जगत्सुखी ॥ म
हो व. उग्रहाकाली सर्वमंगलममृता ॥ ११६ ॥ महा उग्रहाकाली व. उग्रहा
व. योगिनी ॥ कुलाकुल महाकाली नित्यरुद्रा निराश्रया ॥ व. कविशायी
दात्री व. भिक्षा प्रमथिनी ॥ ११७ ॥ श्रीमहा उग्रहा महादेवी कुलसार्थि
योगिनी ॥ श्री भक्ति उग्रहाकाली व. महादेव वासना ॥ ११८ ॥ महा कन्द महा
काली देव दानवमर्दिनी ॥ विनाशुग्रहा महाकाली सामा ॥ ११९ ॥ उग्रहाकाली

ॐ

श्रीसुंभानिः कानिः ४ पृष्ठे ४॥ कर्मसमानं हलसिचपत्रं प्रलंतिः
जर्वं हिनमपिकुत्रं ॥ १८ ॥ त्रिभुवनजननीमित्रमखरुदुर्कवज
लक्ष्मीविहङ्गनृभसुगु ४॥ ममदिनस्य चयादकं शक्तिः यस्मिन् कल
वं नाभयगादकं तस्मिन् ॥ १९ ॥ लाकचस्य सतापेधमाणा वालावेडा
कालिस्थिता ॥ स्वाहाकागासुधरिः ॥ यथा तात्रहात्वं रगतां रूपा ॥
२० ॥ दुःकागायदेवीशक्तिः योगमयित्वं न केरुगु ॥ विदधनर्य

अगताश्चर्यं दुर्किं मूर्किं कत्रतश्चर्यं ॥ २१ ॥ मायात्रपातात्रवित्रता
दशवलवल्लिगात्तुललितललना ॥ यीमिति मूनयस्त्वानिगदन्ति प्ररुद
तस्मिन्नियतं सानि ॥ २२ ॥ क्लानाददयगस्मिर्दसा भाहया नाचयविधं स
॥ वक्रायासिचसदयं नाम्ना ॥ स्वागात्वं सहजनयक्षमा ॥ २३ ॥ नृद
कत्रधेकागमकषु पत्रमाशक्तिस्त्वमिहविहृष्ट ॥ त्वदुखस्वं गात्रय
सीतिगात्रा नाम्नागले कीर्तिः ॥ २४ ॥ उग्रनृदिकत्राधिसमसा दकउठ
त्वं रास्यपञ्चना ॥ २५ ॥ खलककैलरयमात्रिलिहन्ती सार्वलया

स्व१

विधि भागनी ॥ २३ ॥ भस्वगम्यां त्वामपिन रुज न् इत्यत इन्धनं गते विधि
न के ॥ श्रीर्यगीत सिलेनी माया, गंगल्ले तस्य मृता पाया ॥ २४ ॥ सर्व
त्रल्लरुगवति ता त्र साम न क म्पय पति त म पा त ॥ त व य त लारु द;
उ त्रा म त ता, सु ल रु स त ता य थ श्व च त ता ॥ २५ ॥ कि म धि क म थ
ता सि द्धा ति म कि ल्प यि य स्या क्क सु द्द ण रु कि धा न् न् न पा त्व क्क उ
ठि का सि द्धि, त लि मा दि रि त पि रु व ति स म्प दि ॥ २६ ॥ लो र्य त्रा म्

न व त्र स र्ग म्, सु व रु क्क स्य क्क वि नि र्ग म् ॥ व ष्ठा क्क र्च ल मा रु न;
रा व ल्प न्म लु स्य व म हि मा रा व ॥ २७ ॥ क र्क ल मृ त म य नि र्म ल;
य ष्म द् वि न म रु त्वं वी उ ल ॥ या उ प ति त्वा मा प त् स म ये, त स्य स
दा त्वं शु रु दा म्प रु थ ॥ २८ ॥ त व य त ल हं प ति त नि ल्यं, क र्क म म र्
त सि ल्म रु न क ल्यं ॥ ता त्रा क्क स त तं य रु, प्र तु वि रु म न्नी उ ग ति
स म रु ॥ २९ ॥ शु न्या ग म त्र म्म न्म न य दि उ प ति उ ना, धा क ति र्जि
त ला ए ग म् ॥ ग र्क ति त्रो यः शु थि वि म ल म ति ॥ स र्च दा म लु त्रा उं ॥